सोने की कुल्हाड़ी

सोने की कुल्हाड़ी

डॉलफिन प्रकाशन पेइचिङ

प्रथम प्रकाशन : 1982 (विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह द्वारा)

पुन : मुद्रण : 1990

रूपान्तरकार : **फ़ाङ य्वान**

चित्रकार : **याङ युङछिन**

प्रकाशक : **डॉलफिन प्रकाशन**
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ 100037, चीन
वितरक : **चीन अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम**
21 पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ 100044, चीन
पो. आ. बाक्स 399, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

बहुत दिन पहले किसी जगह ली श्याओस्वी नामक एक छोटा-सा लड़का रहता था। पांच साल की उम्र में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। वह अपने भाई-भाभी के साथ रहता था।

एक दिन श्याग्रोस्वी लकड़ी काट कर घर लौट रहा था। रास्ते में उसे एक संकरा पुल पार करना पड़ा।

पुल पार करते समय उसकी कुल्हाड़ी अचानक
हाथ से फिसल गई और गहरी नदी में गिर गई ।

नदी का बहाव बहुत तेज था। श्याग्रोस्वी को नदी से कुल्हाड़ी निकालने का कोई उपाय नहीं सूझा। वह बड़ा निराश हुग्रा ग्रौर नदी के किनारे बैठ कर फूट-फूट कर रोने लगा।

एकाएक उसे एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बाबा दिखाई दिया। बूढ़े बाबा ने पूछाः “बेटा, तुम क्यों रो रहे हो?” श्याओस्वी ने सिसकते हुए बताया कि उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है।

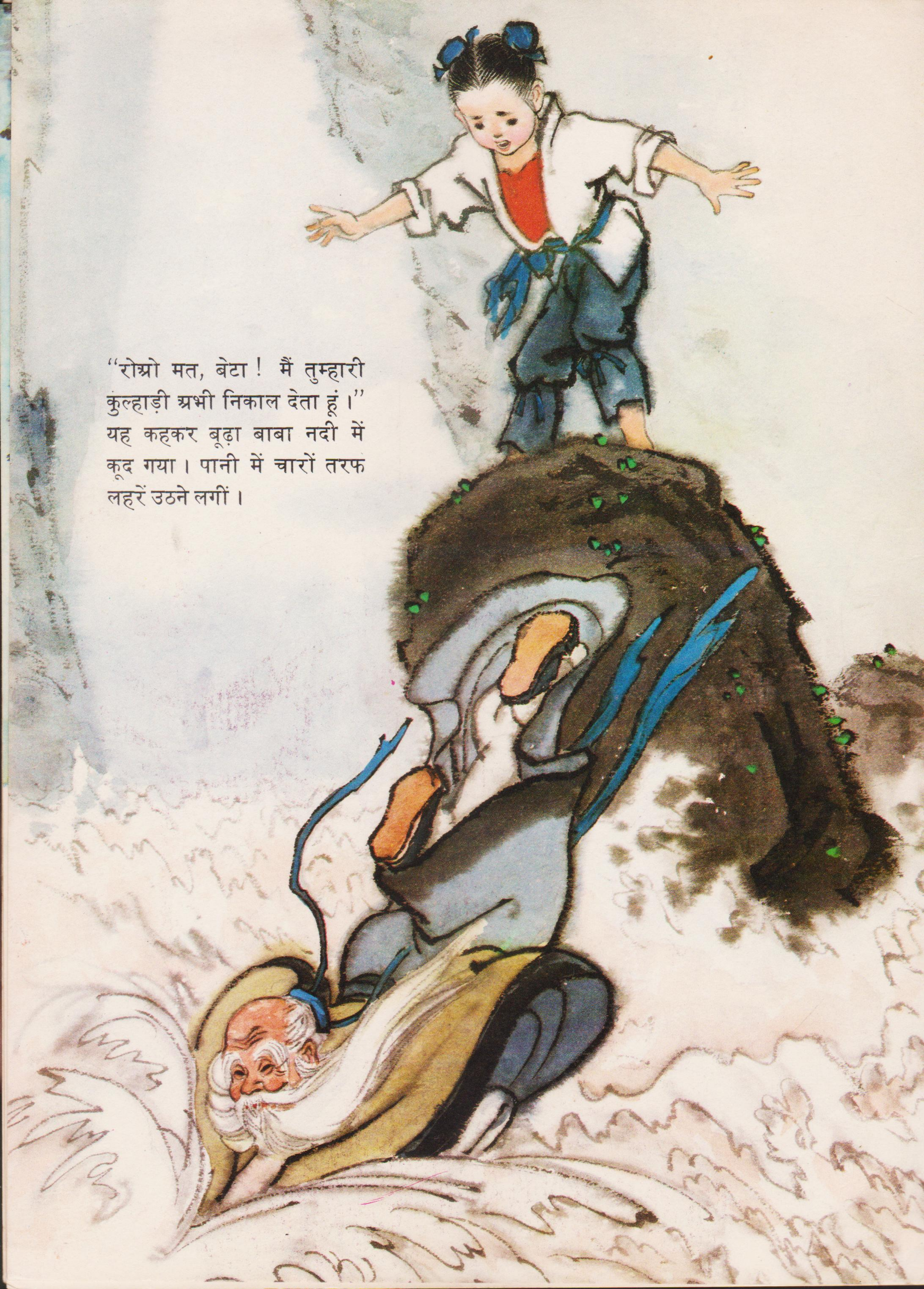

"रोओ मत, बेटा! मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी अभी निकाल देता हूं।" यह कहकर बूढ़ा बाबा नदी में कूद गया। पानी में चारों तरफ लहरें उठने लगीं।

कुछ देर बाद बूढ़ा बाबा चांदी की एक कुल्हाड़ी उठाए ऊपर आया और बोला : "बेटा, क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है ?" श्याओस्वी ने सिर हिलाकर उत्तर दिया : "नहीं बाबा, यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है ।"

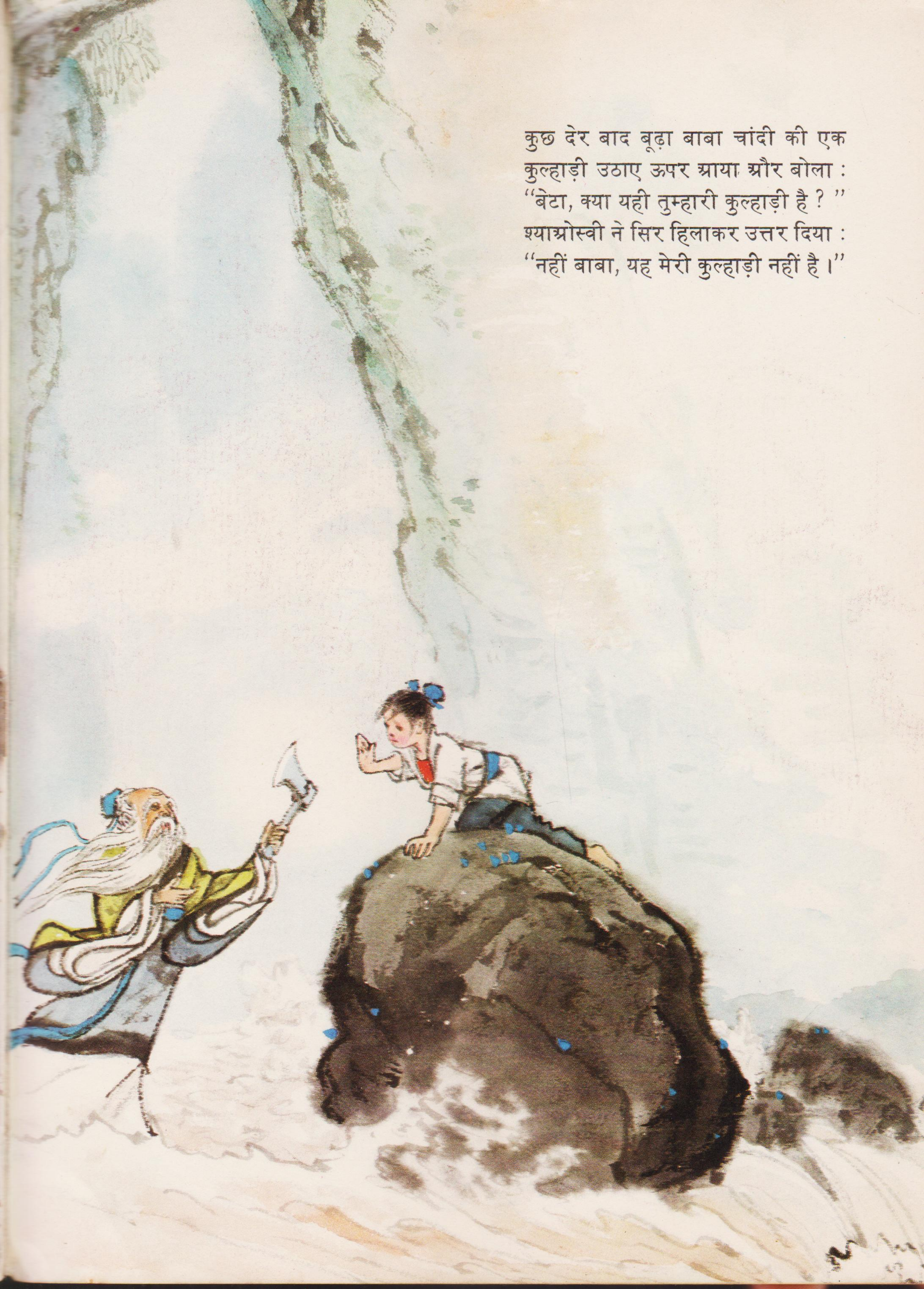

कुछ देर बाद बूढ़ा बाबा सोने की कुल्हाड़ी उठाए किनारे पर लौट आया और बोला : "क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है ?" श्याओस्वी ने फिर एक बार सिर हिलाकर उत्तर दिया : "नहीं बाबा, यह भी मेरी? कुल्हाड़ी नहीं है ।"

यह सुनकर बूढ़ा बाबा मछली की तरह
फिर एक बार नदी में कूद पड़ा।

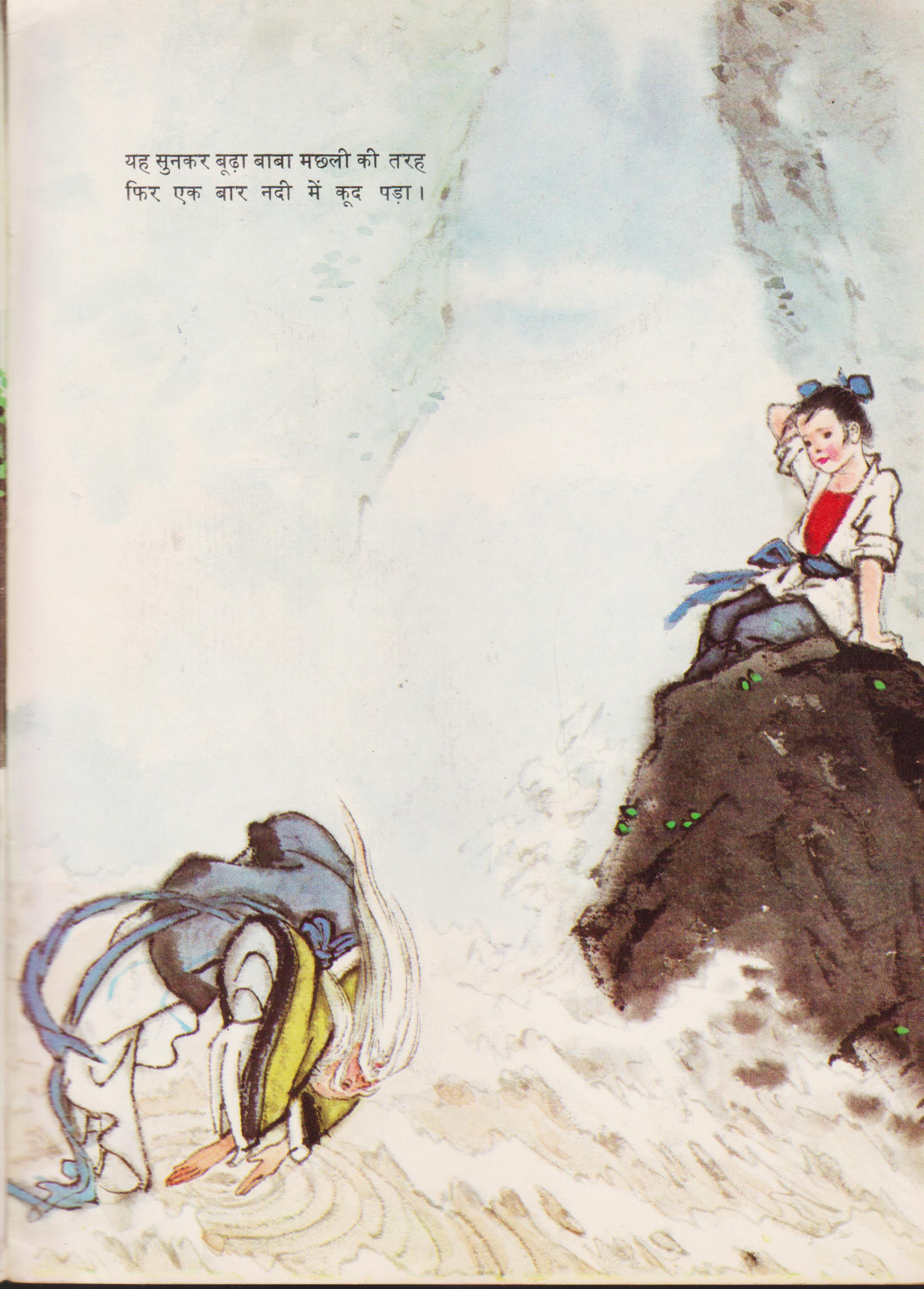

इस बार बूढ़ा बाबा लोहे की वही कुल्हाड़ी निकाल लाया जो श्याओ-स्वी के हाथ से फिसल कर नदी में गिर गई थी। श्याओस्वी खुशी से नाच उठा और बोला : "हां! हां! यही मेरी कुल्हाड़ी है!"

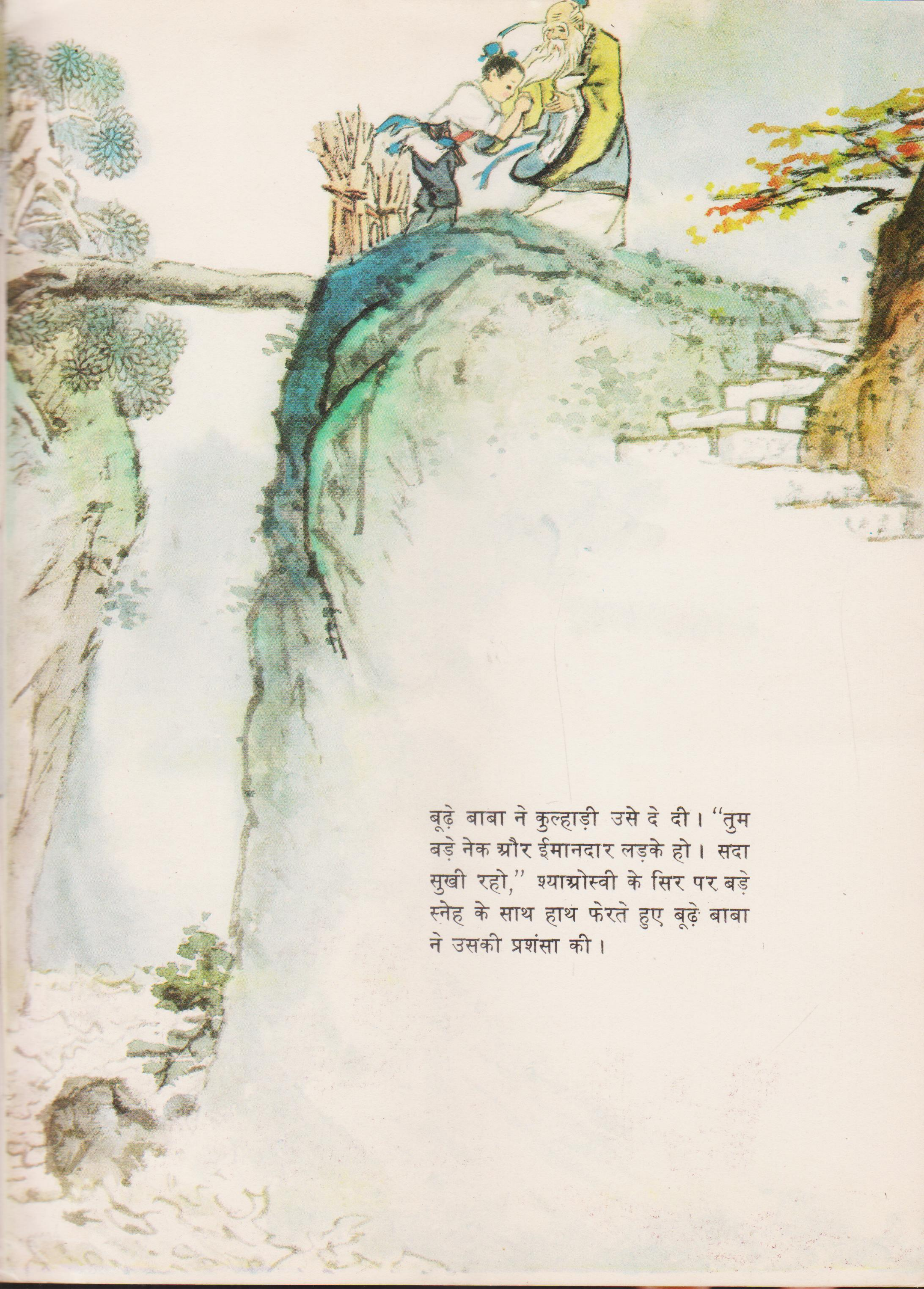

बूढ़े बाबा ने कुल्हाड़ी उसे दे दी। "तुम बड़े नेक ग्रौर ईमानदार लड़के हो। सदा सुखी रहो," श्याग्रोस्वी के सिर पर बड़े स्नेह के साथ हाथ फेरते हुए बूढ़े बाबा ने उसकी प्रशंसा की।

श्याओस्वी कुल्हाड़ी लेकर, घर लौट गया। जब घर पहुंचा, तो आसमान में चांद निकल चुका था।

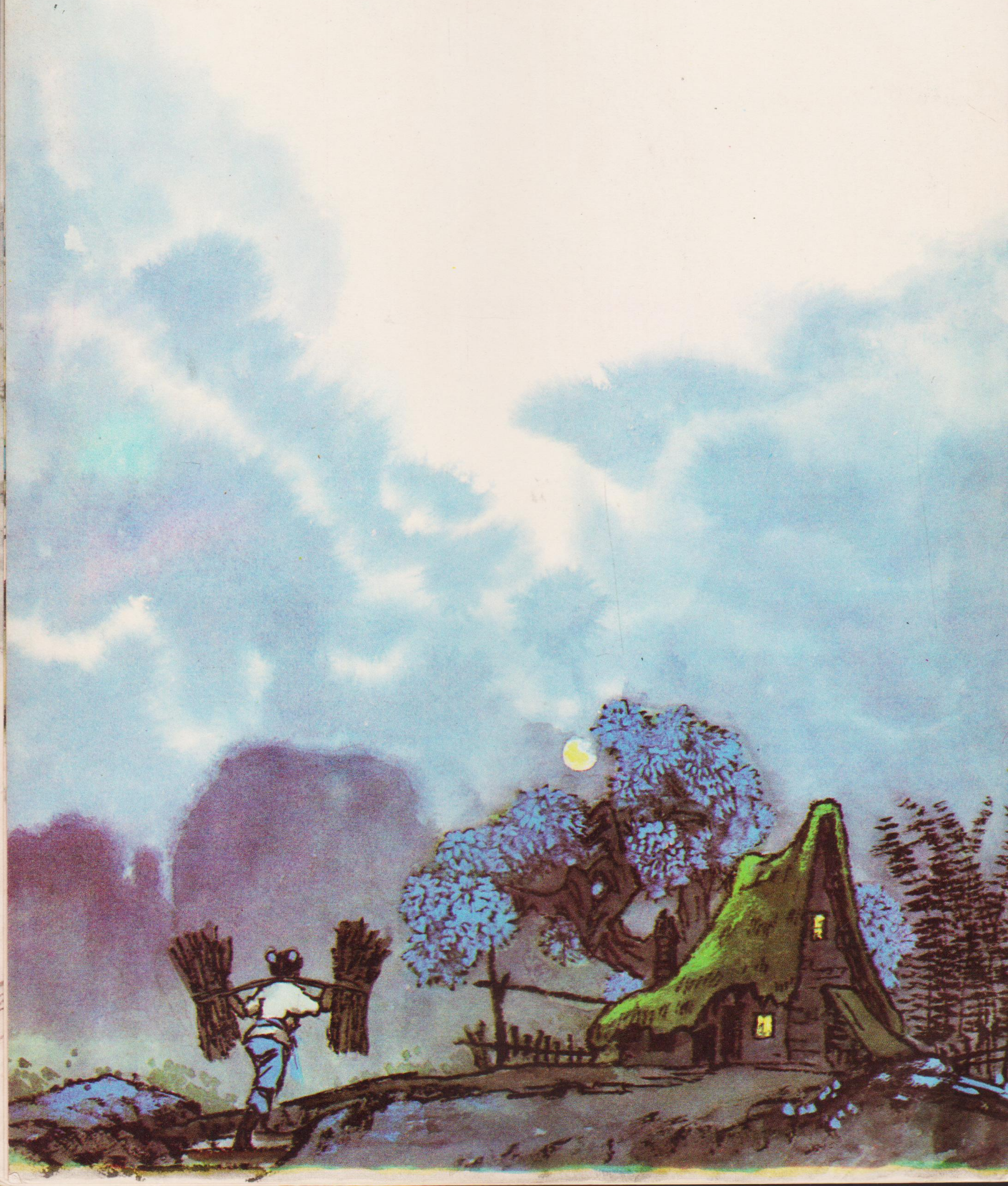

भाई-भाभी ने इतनी देर से लौटने का कारण पूछा तो श्याग्रोस्वी ने कुल्हाड़ी के नदी में गिरने तथा बूढ़े बाबा के मिलने की पूरी घटना ज्यों की त्यों सुना दी।

सारी बात सुनकर भाई-भाभी ने उसे खूब गालियां सुनाईं। वे बोले : "अरे बेवकूफ ! तूने सोने की कुल्हाड़ी क्यों नहीं ले ली ? अगर चांदी की कुल्हाड़ी ही ले लेता, तो भी वह इस पुरानी लोहे की कुल्हाड़ी से कहीं ज्यादा कीमती होती। तेरे जैसा मूर्ख हमने कहीं नहीं देखा !"

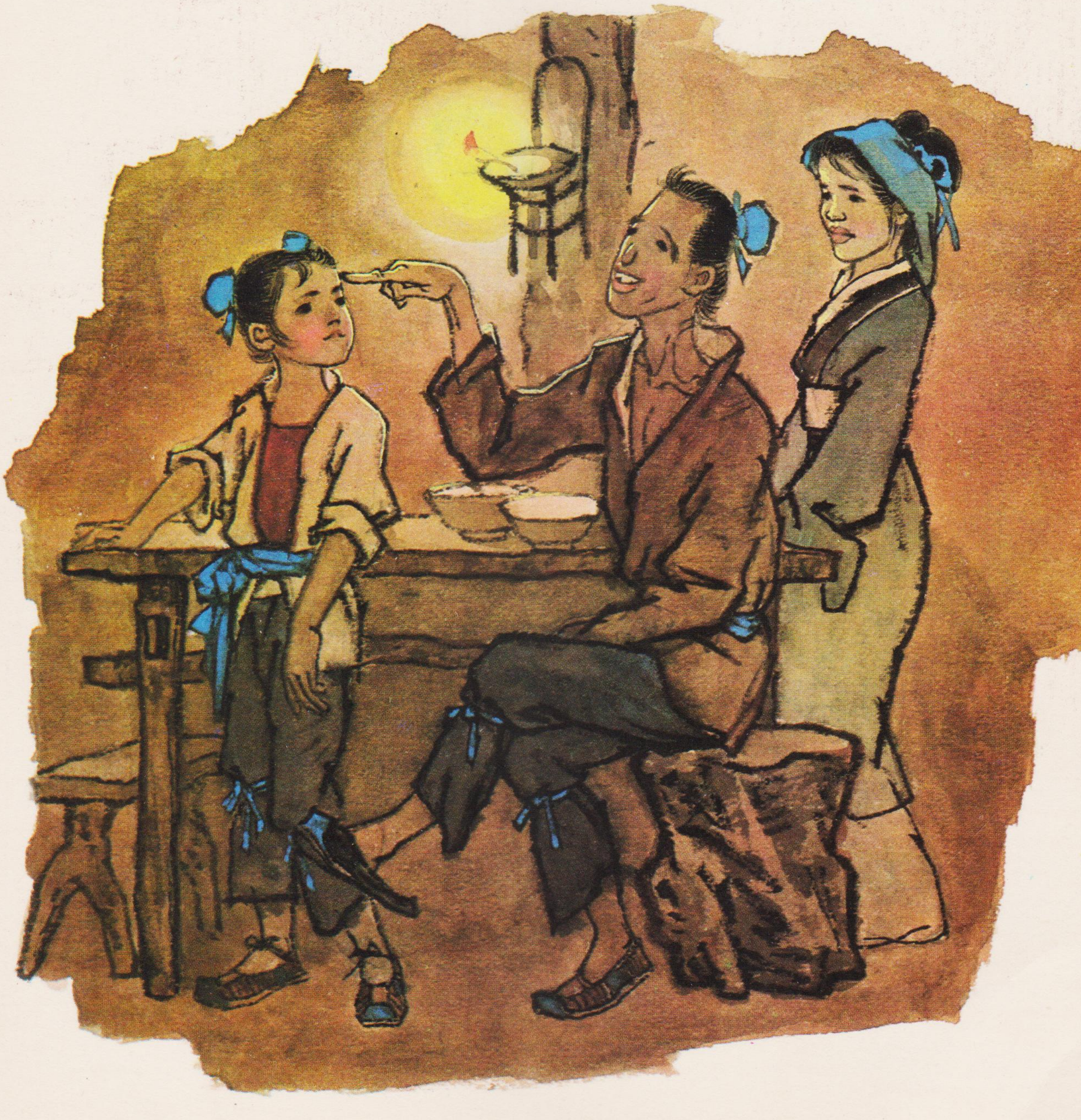

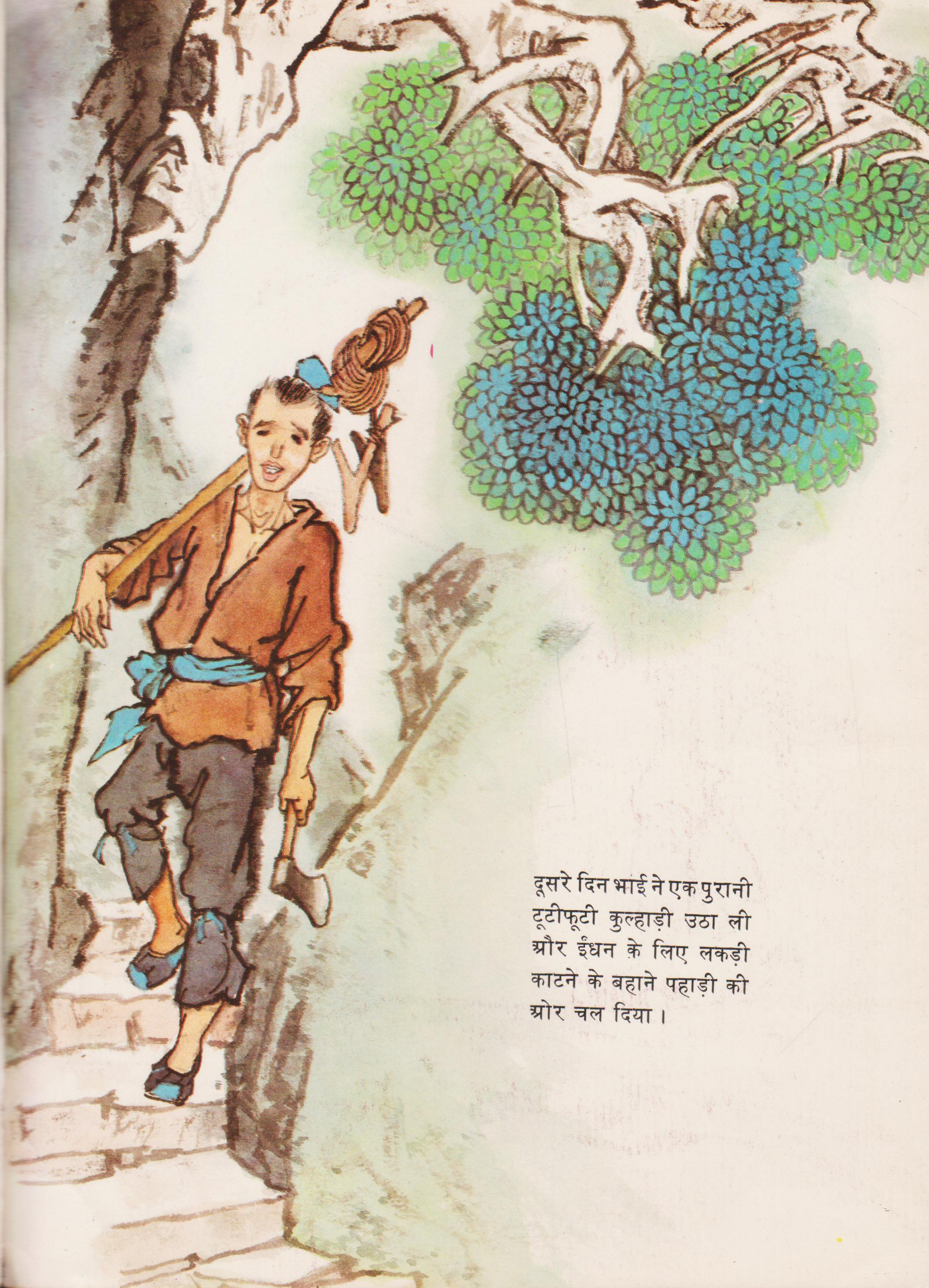

दूसरे दिन भाई ने एक पुरानी टूटीफूटी कुल्हाड़ी उठा ली श्रौर ईंधन के लिए लकड़ी काटने के बहाने पहाड़ी की श्रोर चल दिया ।

संकरे पुल पर पहुंचते ही उसने जान-
बूझ कर कुल्हाड़ी नदी में गिरा दी।

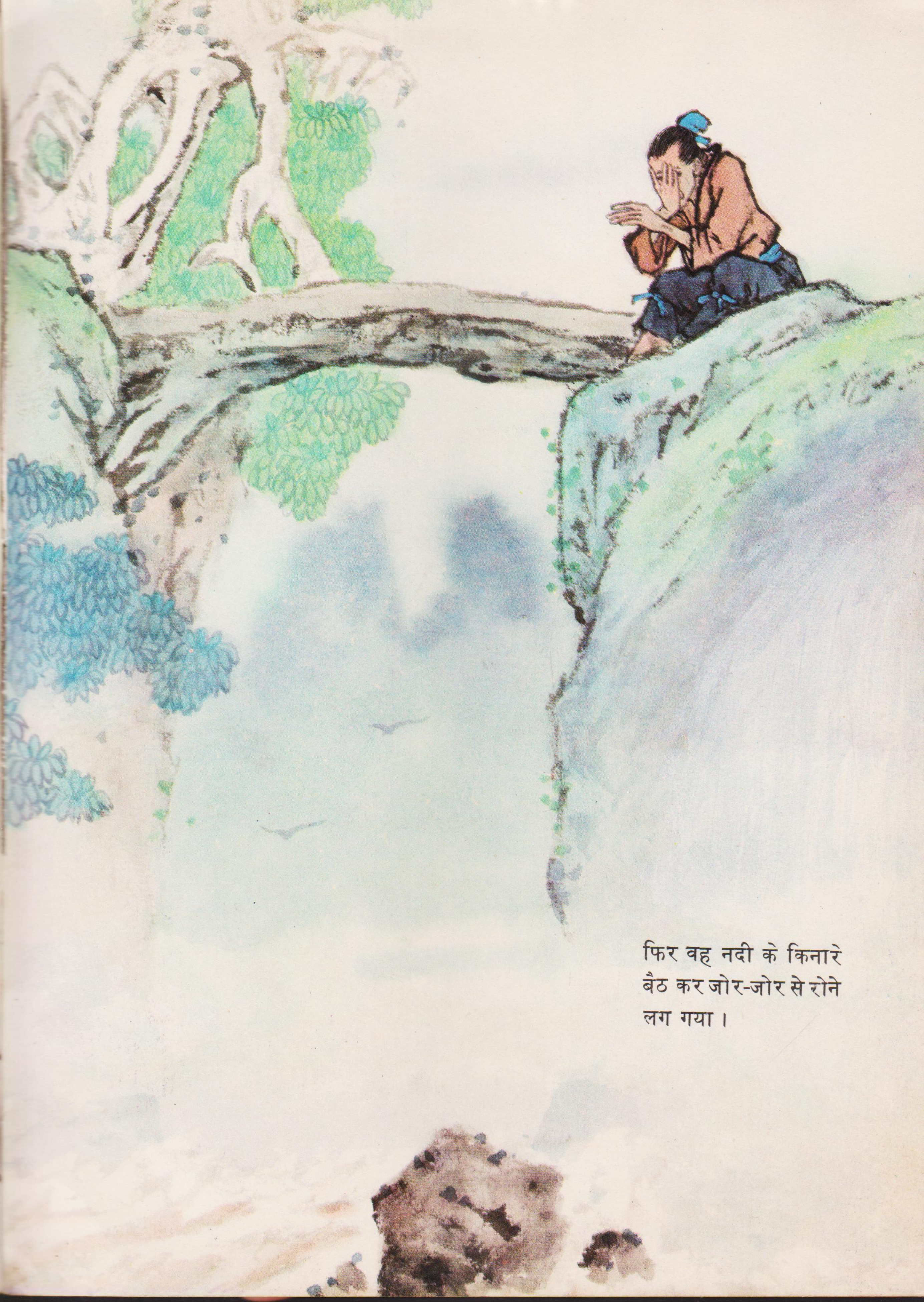

फिर वह नदी के किनारे बैठ कर जोर-जोर से रोने लग गया ।

तभी सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बाबा वहां आ पहुंचा और उससे इस तरह रोने का कारण पूछने लगा। उसने बूढ़े बाबा को बताया कि उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है।

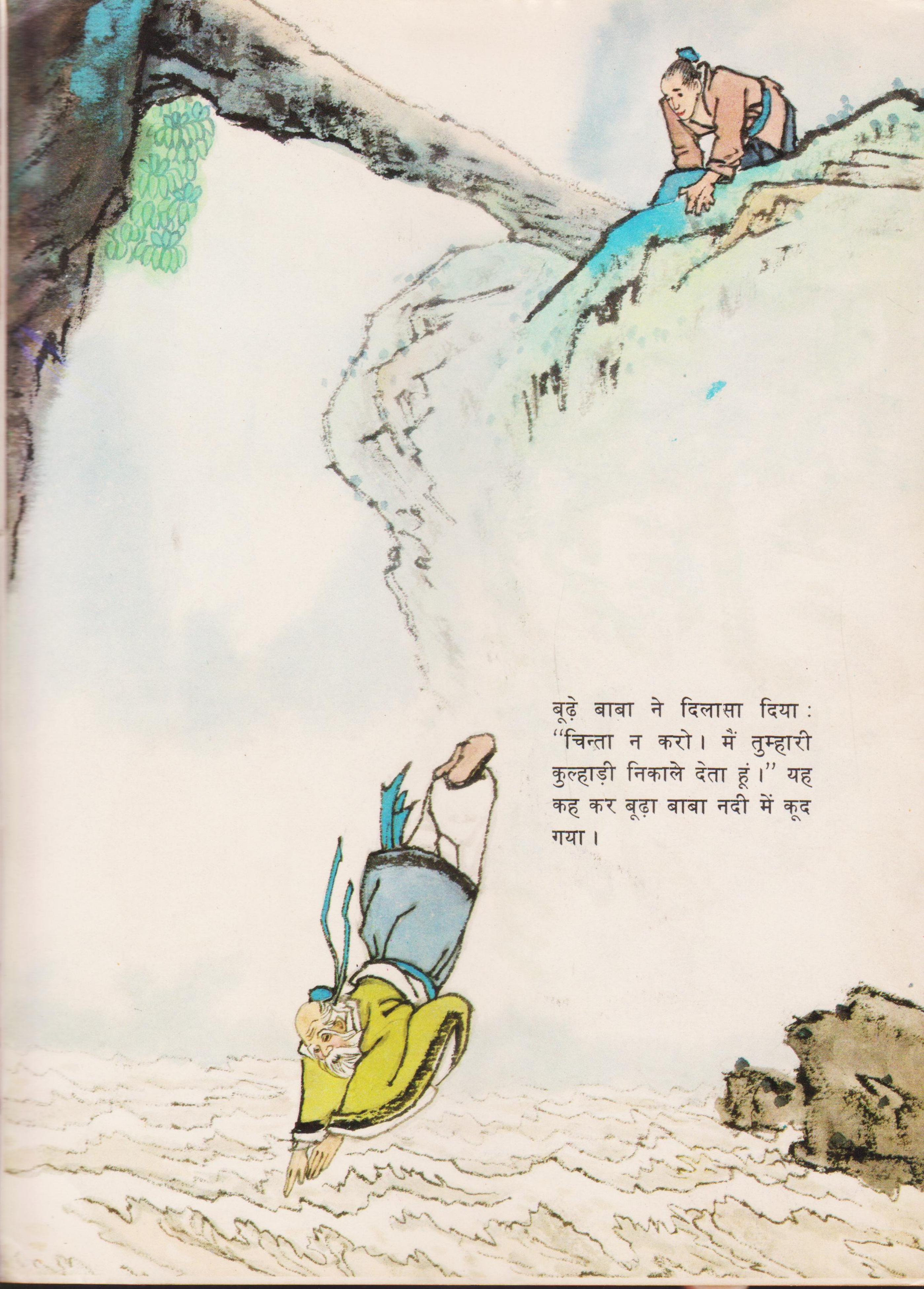

बूढ़े बाबा ने दिलासा दिया : "चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी कुल्हाड़ी निकाले देता हूं।" यह कह कर बूढ़ा बाबा नदी में कूद गया।

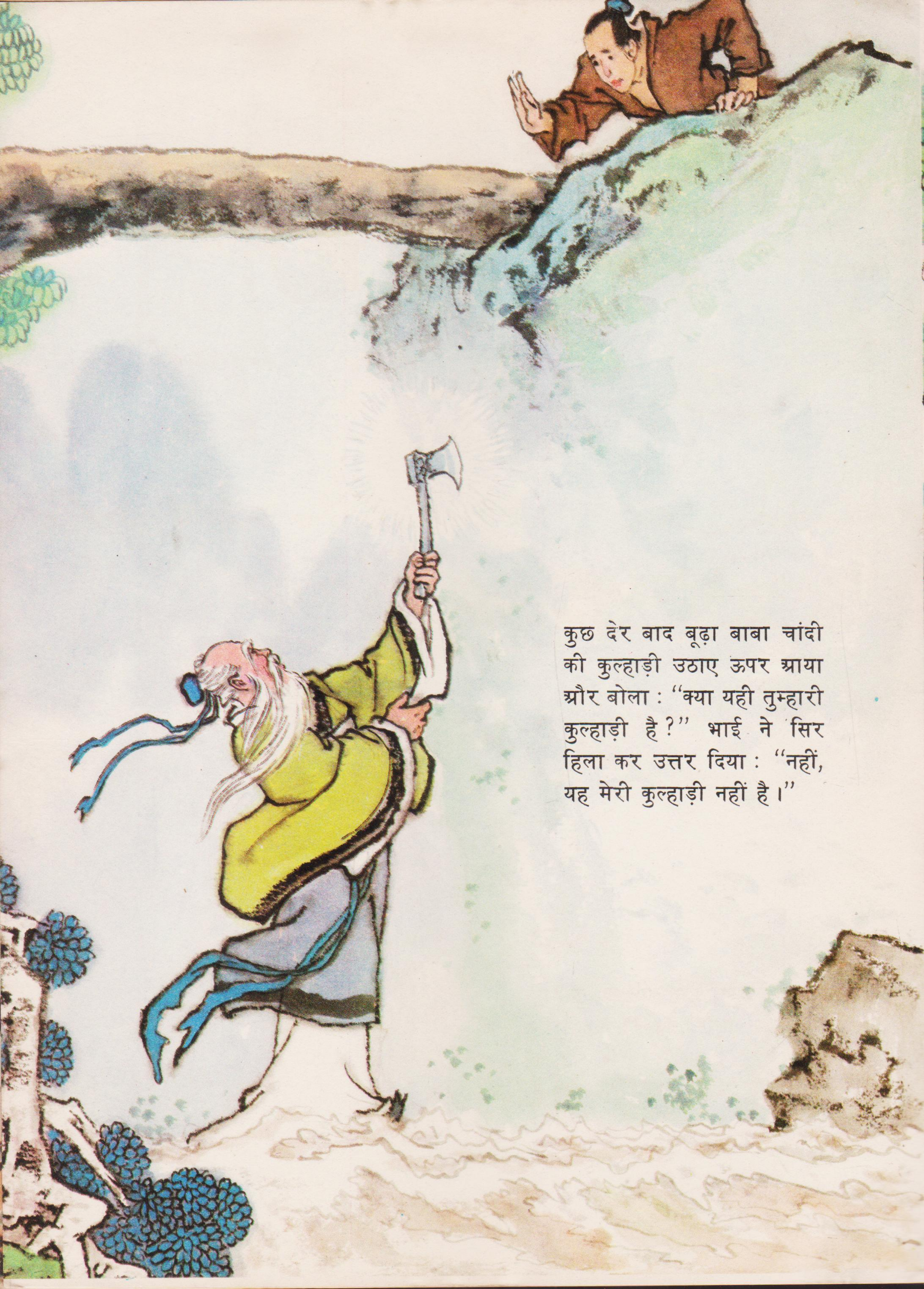

कुछ देर बाद बूढ़ा बाबा चांदी की कुल्हाड़ी उठाए ऊपर आया और बोला : "क्या यही तुम्हारी कुल्हाड़ी है ?" भाई ने सिर हिला कर उत्तर दिया : "नहीं, यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है ।"

बूढ़ा बाबा दूसरी बार सोने की कुल्हाड़ी उठाए ऊपर आया। यह देख कर भाई ने सोने की कुल्हाड़ी उसके हाथ से छीन ली और बोला : "हां, हां, यही मेरी कुल्हाड़ी है!"

जब बूढ़ा बाबा चला गया, तो वह सोने की कुल्हाड़ी को देख कर खुशी से फूला न समाया। लेकिन सोने की कुल्हाड़ी पर कुछ कीचड़ लगा हुआ था।

वह अपना पाजामा ऊपर चढ़ा कर सोने की कुल्हाड़ी को साफ करने पानी के पास जा पहुंचा ।

अचानक सोने की कुल्हाड़ी उसके हाथ से फिसल-
गई और नदी में गिर कर मछली बन गई ।

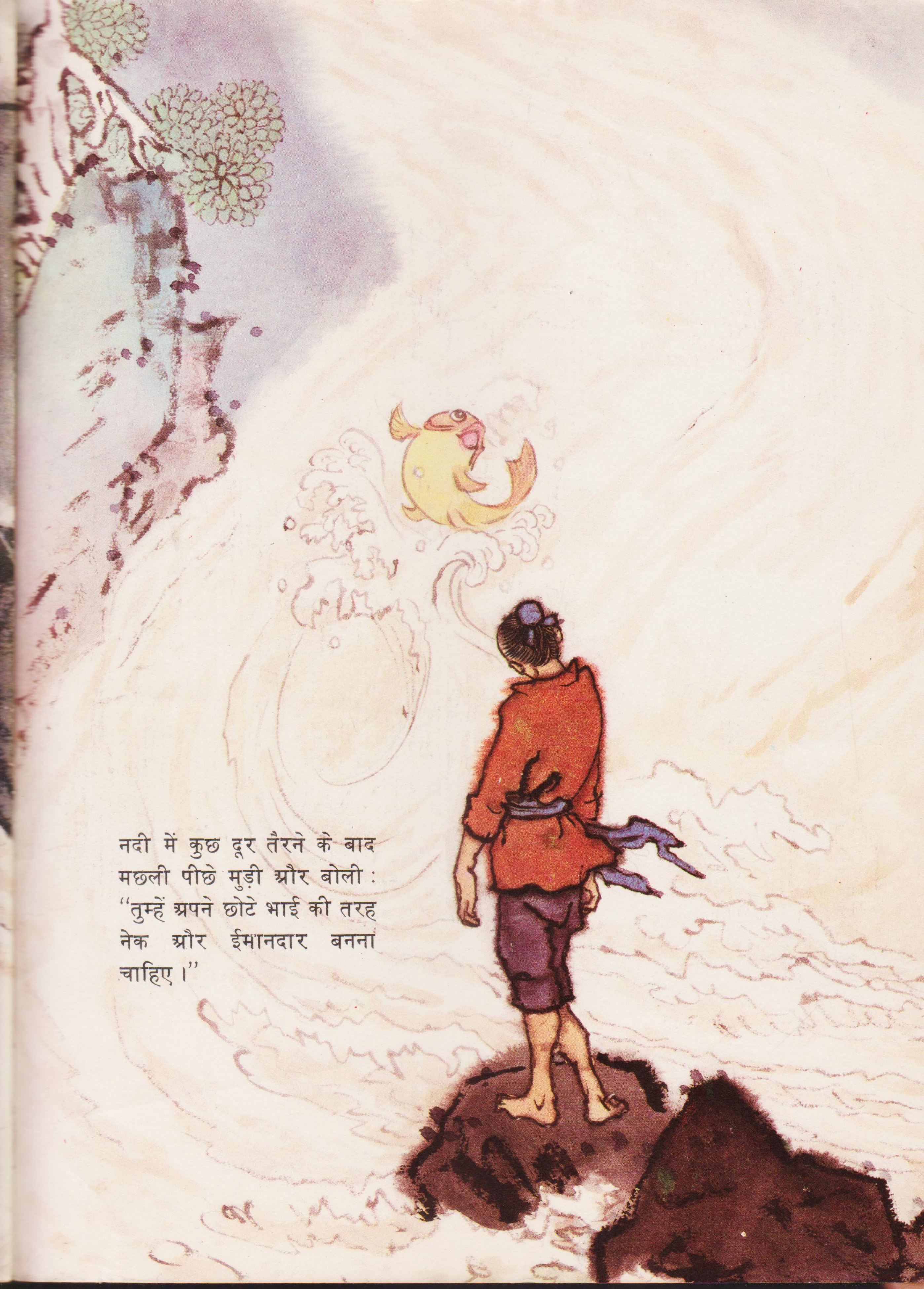

नदी में कुछ दूर तैरने के बाद मछली पीछे मुड़ी और बोली : "तुम्हें अपने छोटे भाई की तरह नेक और ईमानदार बनना चाहिए ।"

भाई उदास हो कर घर लौट आया। उसके दोनों हाथ खाली थे। सोने की कुल्हाड़ी के लालच में वह अपनी पुरानी टूटीफूटी लोहे की कुल्हाड़ी भी गंवा बैठा था।

金斧子
方原 改编
杨永青 绘画
*
海豚出版社出版
(中国北京百万庄路24号)
邮政编码 100037
河澧印刷厂印刷
中国国际图书贸易总公司发行
(中国北京车公庄西路21号)
北京邮政信箱第399号 邮政编码 100044
1990年(16开)第一版
(印地)
ISBN 7-80051-616 4/J·823(外)
00320
88-H-195P